University in News on 21 June 2024

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

भाउराव देवरस शोध पीठ के निदेशक बने लविवि के प्रो. राममिलन

लखनऊ। लखनऊ विवि में कॉमर्स विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राममिलन को भाउराव देवरस शोध पीठ का निदेशक बनाया गया है। कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार सिंह ने कुलपति के अनुमोदन के बाद बृहस्पतिवार को यह आदेश जारी किया। विभाग के शिक्षकों व विद्यार्थियों ने उन्हें शुभकामनाएं दीं। (संवाद)

लविवि : बीबीए में अब होटल मैनेजमेंट भी पढ़ेंगे विद्यार्थी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म स्टडीज के अंतर्गत चलने वाला बीबीए (बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) पाठ्यक्रम अब बीबीए टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी के नाम से जाना जाएगा। इसमें विद्यार्थियों को होटल मैनेजमेंट भी पढ़ाया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत इसका पाठ्यक्रम तैयार हो गया है। फैकल्टी बोर्ड और एकेडमिक काउंसिल की बैठक में मंजूरी के बाद नए सत्र से इसे लागू कर दिया जाएगा।

लखनऊ विवि के नवीन परिसर स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म स्टडीज में चलने वाले इस पाठ्यक्रम में यहां मास्टर ऑफ टूरिज्म एंड ट्रेवेल मैनेजमेंट (एमटीटीएम) और बीबीए टूरिज्म कोर्स चलता है। कुछ सप्ताह पहले ही बीबीए टूरिज्म को अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआइसीटीई) से मंजूरी मिली है। अब इसे एनईपी के अंतर्गत आठ सेमेस्टरों (चार वर्ष) में पढ़ाया जाएगा। इसके साथ ही बच्चों इंटर्नशिप भी कराई जाएगी। (संवाद)

JAGRAN CITY PAGE III

लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. राम मिलन बने निदेशक

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर राम मिलन को भाऊराव देवरस शोध पीठ का निदेशक बनाया गया है। उनका कार्यकाल अग्रिम आदेशों तक रहेगा। कुलपति के अनुमोदन के बाद कुलसचिव डा. विनोद सिंह ने गुरुवार को आदेश जारी कर दिया। (जासं)

परिणाम जारी

लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय ने बीफार्म और एम.एससी मालीकुलर एंड ह्यूमन जेनेटिक्स चौथे सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम जारी कर दिया है। छात्र-छात्राएं विश्वविद्यालय की वेबसाइट https://www.lkouniv.ac.in/ के माध्यम से अपना परिणाम देख सकते हैं।

PIONEER PAGE 3

महिला सशक्तिकरण में उत्प्रेरक का काम करता है योग

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योग का सही अर्थ जोड़ना है न कि सिर्फ शारीरिक व्यायाम करना। योग हमारी बिखरे हुए व्यक्तित्व को जोड़ता है तो हमारे समाज को भी जोड़ने का काम करता है। योग द्वारा हम महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्रबन्धित ढंग से प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि योग से महिलाएं स्वव्यक्तित्व निर्माण, तनाव और परिवार प्रबंधन में इसका नित्य प्रति उपयोग कर सकती है। परिवार का मुख्य उत्तरदायित्व विशेष तौर पर महिलाओं पर ही होता है और वे योग द्वारा इसे और बेहतर ढंग से कर सकती है। उक्त विचार विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य में गुरुवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग स्थित पं. दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ द्वारा आयोजित व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय के योग संकाय के शिक्षक डॉ. सत्येन्द्र मिश्र ने व्यक्त किये।

उन्होंने सशक्तीकरण को महिलाओं के लिए स्वयत निर्णय लेने और स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जीने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि योग महिलाओं को चुनौतियों को स्वीकार करने की आत्म इच्छा और शक्ति को मजबूत करने के साथ उनमे आत्म-खोज और ऊर्जा प्रबंधन का मार्ग प्रशस्त करता है। पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के निदेशक प्रो.राकेश राकेश द्विवेदी ने मुख्य वक्ता डॉ.सत्येंद्र मिश्रा का परिचय करते हुए योग के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने दैनिक जीवन में योग के व्यापक प्रभाव और समकालीन चुनौतियों से निपटने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की। प्रो.द्विवेदी ने इस बात पर जोर दिया कि कैसे योग सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देता है जो संतुलित जीवन का अभिन्न अंग है। इसलिए योग सीधे तौर पर महिला सशक्तिकरण की अवधारणा से जुड़ा है। उन्होंने योग के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर भी अपने विचार प्रकट किये और इसकी शाश्वत प्रासंगिकता को दर्शाया। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में मनाये जा रहे योग सप्ताह के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उत्सव में न केवल योग और महिला सशक्तिकरण के बीच संबंध पर प्रकाश डाला, बल्कि उपस्थित लोगों को समग्र विकास और सशक्तिकरण के लिए योग को अपने जीवन में शामिल करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का आरम्भ पं. दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्पांजलि से हुआ। विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश द्विवेदी द्वारा पुष्प गुच्छ और अंगवस्त्रम भेंट कर डॉ. सत्येन्द्र मिश्र का अभिनन्दन किया गया। विभाग के सहायक आचार्य डॉ. रमेश त्रिपाठी ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए शारीरिक और मानसिक कल्याण को बढ़ाने में योग के महत्व को रेखांकित किया और योग के सार के बारे में बात की। उन्होंने यह भी कहा कि योग हमारी अंतर्दृष्टि का विकास करता है जो जीवन का आधार है। आज के कार्यक्रम में छात्रा शिवांगी त्रिपाठी द्वारा उपस्थित लोगों को योग करने की शपथ दिलाई। जिसमे सभी लोगों ने योग को जीवन का अभिन्न अंग बनाने कि शपथ ग्रहण की।

RASHTRIAYA SAHARA PAGE 7

जीवन में योग का महत्व : प्रो. द्विवेदी

लखनऊ (एसएनबी)। विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य में लखनऊ विश्वविद्यालय समाज कार्य विभाग स्थित पं. दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ द्वारा आयोजित व्याख्यान में निदेशक प्रो. राकेश द्विवेदी ने दैनिक जीवन में योग के व्यापक प्रभाव और समकालीन चुनौतियों से निपटने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की।

प्रो. द्विवेदी ने इस बात पर जोर दिया कि कैसे योग सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देता है जो संतुलित जीवन का अभिन्न अंग है, इसलिए योग सीधे तौर पर महिला सशक्तिकरण की अवधारणा से जुड़ा है। उन्होंने योग के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर भी अपने विचार प्रकट किये और इसकी शाश्वत प्रासंगिकता को दर्शाया। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में मनाये जा रहे योग सप्ताह के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उत्सव में न केवल योग और महिला सशक्तिकरण के बीच संबंध पर प्रकाश डाला, बल्कि उपस्थित लोगों को समग्र विकास और सशक्तिकरण के लिए योग को अपने जीवन में शामिल करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का आरम्भ पं. दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्पांजलि से हुआ। विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश द्विवेदी द्वारा पुष्प गुच्छ और अंगवस्त्रम भेंट कर डॉ. सत्येन्द्र मिश्र का अभिनन्दन किया गया। विभाग के सहायक आचार्य डॉ. रमेश त्रिपाठी ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए शारीरिक और मानसिक कल्याण को बढ़ाने में योग के महत्व को रेखांकित किया और योग के सार के बारे में बात की। कहा, योग हमारी अंतर्दृष्टि का विकास करता है, जो जीवन का आधार है।

विश्व योग दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित हुए कार्यक्रम

कार्यक्रम में छात्रा शिवांगी त्रिपाठी ने उपस्थित लोगों को योग करने की शपथ दिलाई। डॉ.रोहित मिश्र ने डॉ. सत्येन्द्र मिश्रा को उनके ज्ञानवर्धक व्याख्यान और सभी प्रतिभागियों को उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम में वीरेन्द्र त्यागी, डॉ.रणविजय सिंह, डॉ. मधुशिखा श्रीवास्तव शोध छात्रा अंजलि मिश्रा, शिवांगी त्रिवेदी, संजय, शिवानी, प्रगति सिंह आदि उपस्थित रहे।

अस्थमा के रोगी इनहेलर संग करें योग व प्राणायाम : डॉ. सूर्यकान्त

लखनऊ। अस्थमा के रोगी इनहेलर के साथ-साथ योग व प्राणायाम भी करें। यह बात किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के रेस्पिरेट्री मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. सूर्यकांत ने वृहस्पतिवार को योग केंद्र में कही। डॉ. सूर्य कान्त ने बताया कि विश्व में लगभग 40 करोड़ लोग अस्थमा से ग्रसित है और इसके लगभग 10 प्रतिशत 3.57 करोड़ लोग भारतवर्ष में है। भारत में प्रतिवर्ष 2 लाख लोगों की मृत्यु इस रोग के कारण होती है। दुनिया में अस्थमा से होने वाली मृत्यु का 46 प्रतिशत भाग भारतवर्ष में ही है। अस्थमा एक गंभीर बीमारी है जिसमें श्वास नालियों की भीतरी दीवारों में सूजन आ जाती है जो किसी भी एलर्जन के संपर्क में आने से प्रतिक्रिया व्यक्त करती है और फेफड़ों में हवा की मात्रा कम हो जाती है। अस्थमा के रोगियों में इनहेलर सबसे प्रभावी इलाज है जिसका प्रयोग उचित तरीके से डॉक्टरी सलाह के अनुसार करना चाहिए । डॉ. सूर्य कान्त बताते है कि अस्थमा के रोगियों को प्रतिदिन इनहेलर लेना चाहिए और साथ ही साथ गोमुखासन, पश्चिमोत्तानासन, भुजंगासन, धनुरासन, ताड़ासन, पर्वत आसान, नाड़ी शोधन प्राणायाम, भस्त्रिका प्राणायाम एवं भ्रामरी प्राणायाम करना चाहिए।

AMRIT VICHAR PAGE 7

प्रो. राम मिलन बने निदेशक

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने वाणिज्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो . राम मिलन को तत्काल प्रभाव से अगले आदेश तक भाऊराव देवरस शोध पीठ, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के निदेशक के पद पर कार्य करने के लिए नियुक्त किया है। रजिस्ट्रार डॉ . विनोद कुमार सिंह का कहना है कि नियुक्ति आदेश तत्काल प्रभाव से प्रभावी किया गया है।

बीफार्मा और एमएससी का परीक्षाफल घोषित

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय ने बीफार्मा और एमएससी का परीक्षाफल घोषित किया है। परीक्षा नियंत्रक विद्यानंद त्रिपाठी का कहना है कि बीफार्मा में बैचलर ऑफ फार्मेसी और एमएससी के मॉल्यूक्यूलर एण्ड ह्यमेन जेनेटिक्स का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया है। विस्तृत जानकारी विवि की वेबसाईट पर उपलब्ध है।

8 हजार छात्रों ने दी परीक्षा

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय और उससे संबद्ध महाविद्यालयों में गुरुवार को परीक्षा के आयोजन हुए। तीन पालियों में आयोजित परीक्षा के दौरान 8 हजार छात्र उपस्थित रहे। पहली पाली में छात्रों की उपस्थिति 4382 रही। दूसरी में एक भी छात्र भी नहीं था। अंतिम पाली में 3666 छात्रों ने परीक्षा में प्रतिभाग किया।